यह पाठशाला है पाठ पढ़ना है। पाठ है ही मनुष्य से देवता बनाने का। कौन पढ़ाते है? बाप। बच्चों को तो समझाया है ना कि मोक्ष वा मुक्ति आदि की तो बात ही नहीं है। भक्ति मार्ग में विचारे बहुत ही दुःखी हुए हैं। यह तो वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी रिपीट करती रहती है। सतयुग में जो है कलियुग में जो है सब को पार्ट बजाना है। कोई भी स्वतंत्र तत्व आदि में लीन नहीं होता है। भक्ति मार्ग का इस समय बहुत प्रभाव है। भक्ति और ज्ञान अर्थात राम और रावण की है युद्ध। ज्ञान है नया तो थोड़े हैं। भक्ति के बहुत हैं। तुम आत्मे2 जीत पहनते जाते हैं। जब लड़ाई होती है तो तो शक्तिवान जीतते हैं। राम की जीत होती ही है। अभी तो रावण का राज्य है ना। रामराज्य और रावण राज्य अक्षर कहते हैं परन्तु अर्थ नहीं समझते। बाप बैठ समझाते हैं तुम रावण पर जीत पहन फिर से सुखधाम की स्थापना करते हो। कहते हैं डबल हिंसक। यहां डबल अहिंसक। हिंसा कितनी प्रबल है, काम कितना प्रबल है। हार खा लेते हैं तो की कमाई चट हो जाती है। यह है हार और जीत। पतित हार पावन जीत। अभी तुम जानते हो हम यह बन रहे हैं। सभी को समझाओ बाप यह समझाते हैं। यहां 2। पीढ़ी तुम राज्य करते हो। बड़ा खुशी से एक शरीर छोड़ दूसरा लेंगे। जैसे सर्प खाल उतारती है ना यह भी तुम्हारी पुरानी जूती है। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी रहनी चाहिए। जानते हो हम सुखधाम में जाते हैं। शान्तिधाम, सुखधाम व दुःखधाम। यह ज्ञान तुमको और कहीं भी नहीं मिलेगा। यह चित्र तुम ही देखते हो समझते हो। फिर 5000 वर्ष बाद तुम ही देखेंगे। अभी तुम्हारा यह है अन्तिम जन्म इस मृत्युलोक का। तुम जानते हो बाबा हमको अमर कथा सुना कर अपने अमरलोक ले जाते हैं। योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो। बन्दर खाना चाहिए ना। बाबा तो माया से बाहर निकाल देते हैं। यह है सतसंग। सतसंग तारे कुसंग बोरे। सतसंग किसको कहा जाता है वह तो सत बाप एक ही बार सब की सद्गति करते हैं। कुसंग से फिर डूबते जाते हैं। अभी रावण का राज्य कितना बड़ा है। तुम्हारी योगबल से नई दुनिया बनती है। बाबा कहते हैं रचना के आदि मध्य अन्त को भी जानते हो। तुम ही आस्तिक। बाकी सब हैं नास्तिक। यह हैं आस्तिकों की दुनिया। यह है नास्तिकों की दुनिया। बाप कहते हैं बच्चे माया से हारना नहीं। माया भी प्रबल है। हार ते भी हैं जीतते भी हैं। माया जोर से युद्ध=युद्ध करती है तो हरा देते हैं। बाप स्टीमर चलाते हैं। बाप तोकय2 आते हैं। अपना और रचना के आदि मध्य अन्त का राज़ बताते हैं। बच्चों को खुशी रहनी चाहिए श्रीमत परहम अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। ज्ञान और योगबल से। बाकी युद्ध आदि की बात नहीं। यह पढ़ाई है। पढ़ाई के रौब आफ इनकम। भक्ति-मार्ग में यह बातें कुछ जानते नहीं है। भक्ति मुर्दाबाद ज्ञान जिन्दाबाद। कोई को भी कहो तो बिगड़ते हैं। अति-इन्द्रिय सुख इस समय का गाया हुआ है। यह संगम युग है ना। इस समय की बातें ही मिस कर दी है। बाप कहते हैं वह शास्त्र आदि सब दुर्गति के हैं। अभी बाप बैठ पढ़ाते हैं। दुनिया में और कोई कह न सके बाप टीचर गुरु एक ही है। यह शाह आते2 दृष्टि को पायेगा। यह सारा शाह तैयार होगा यहां। आयेंगे फिर नम्बरवार। यहां तुम पढ़ते हो अमरलोक लिए। ऐसे कोई कह सकते कहते हैं नहीं हैं कि हम भविष्य के लिए पढ़ते हैं। तुमको बाप अमरपुरी नई दुनिया के लिए पढ़ते हैं। वहां यह ज्ञान आदि न होगा। इस संगमयुगी पुरुषोत्तम ब्राह्मण बस सब से ऊंच लेवे। न=युद्ध को न देखता को यह ज्ञान रहता है। वहां दुर्गति वाला कोई होता ही नहीं। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। इसीलिए गायन है अति इन्द्रिय सुख गोपीकोपियों से पूछो। भारत जो सालवेन्ट था अभी इनसालवेन्ट है। यह भी नई बात नहीं है। तुम ने कितना बार राज्य लिया है। और गंवाया है। स्वर्ग यह है वन्डर ऑफ दी वर्ल्ड जिसके लिए तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। बाप से तो बहुत प्रेम प्रीत चाहिए। ऐसे बाप को बहुत प्यार से याद करना चाहिए। वह रथ भी उनको याद करते हैं ना। यह ब्रह्मा जैसे कि बनवास में है। तुम सभी बनवास में हो। अभी सतुर घर जाना है। ज्ञानरत्नों का श्रृंगार हो रहा है। अच्छा बच्चों को गुडनाईट। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।